अभिप्राय–ऑपिनियन

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

भूत, वर्तमान और भविष्य कार्य कारण परम्परा से परस्पर जुड़े हैं। यह प्राकृतिक नियम से चल रहा है। जिसका भूत अच्छा है उसका वर्तमान भी अच्छा होगा और जिसका वर्तमान अच्छा है उसका भविष्य भी अच्छा होना चाहिए। हमें वर्तमान में रहना चाहिए। हमें किसी के प्रति अपने अभिप्राय को बिगाड़ना नहीं चाहिए। अभिप्राय का अर्थ है आशय। प्रतिक्रिया को व्यक्त करना अभिप्राय है। कभी किसी व्यक्ति ने चोरी किया तो हम उसे चोर कहते हैं। उस समय वह चोरी कर रहा था तो वह चोर कहलाया। आज वह चोरी नहीं कर रहा है तब भी सभी उसे चोर कहते हैं किन्तु यह ठीक नहीं है।

ओपिनियन बदलती रहती है। देशकाल और परिस्थिति के अनुसार उसमें परिवर्तन होता रहता है। फिल्म के देखने के बाद हीरो–हिरोइन के विषय में हमारी ओपिनियन उनसे जुड़कर अच्छी बन जाती है। किन्तु खलनायक के प्रति हमारी ओपिनियन भिन्न रहती है। उनके कार्यों को देखने से मन में विभिन्न प्रकार के विचार आते रहते हैं। मनुष्य किसी कार्य में स्वतंत्र नहीं है। जिसके प्रति आसक्ति रहती है उसके प्रति हमारी ओपिनियन अच्छी होती है। जिसके प्रति आसक्ति नहीं होती या जिससे विचारधारा मेल नहीं खाली उसके प्रति विचार विरूद्ध हो जाते हैं।

राग–द्वेष के कारण किसी के प्रति राग, किसी के प्रति द्वेष होना स्वाभाविक है। मानव राग–द्वेष का पुतला है। राग–द्वेष जन्म–जन्मांतर से बंधे हुए हैं। यह आसक्ति के कारण है। आसक्ति ही बंधन है। हमें किसी के प्रति राग–द्वेष की भावना नहीं रखनी चाहिए। निरपेक्ष रूप से किसी के प्रति विचार रखकर ओपिनियन व्यक्त करनी चाहिए। दृष्टा भाव से विचार कना चाहिए। ओपिनियन व्यक्त करना बंधन का कारण है। हम किसी को सलाह दे सकते हैं। किसी से राग–द्वेष करना बंधन होता है।

सलाह और ओपिनियन एक–दूसरे के विरूद्ध है। कर्ता भाव आते ही अहंकार आ जाता है। किसी कार्य को सम्पन्न करने में अनेक कारण होते हैं। किन्तु जब व्यक्ति अपने को कर्ता मान लेता है तो उसमें अहंकार के बीज पनपने लगते हैं। एक परिवार में अनेक सदस्य होते हैं। सबका अपना अलग–अलग भाव विचार, विवेक और ओपिनियन होता है। कभी दो व्यक्तियों के विचार समान हो सकते हैं और कभी भिन्न–भिन्न भी हो सकते हैं। ऐसी अवस्था में सामन्जस्य बनाने का प्रयास करना चाहिए।

भारतीय संस्कृति में संयुक्त परिवार प्रथा एक विशेषता है। यह प्रथा बहुत प्राचीनकाल से चली आ रही है। परिवार के सभी सदस्य एक साथ एक छत के नीचे जीवनयापन करते है। सब एक साथ रहते है। सबमें एकता बनी रहती है। सामूहिक परिवार का सबसे बड़ा लाभ यह है कि कोई भी कार्य हो सबके सहयोग से शीघ्र हो जाता है। लकड़ी का एक गट्ठर बना दिया जाये तो उसको कोई तोड़ नहीं सकता। लेकिन उसको एक–एक कर अलग कर दिया जाये तो उसको आसानी से तोड़ा जा सकता है। परिवार के ऊपर भी यह सूत्र लागू होता है। अलग–अलग रहने पर कोई भी पराजित कर सकता है किन्तु एक साथ रहने पर कोई भी परिवार से विवाद नहीं कर सकता है।

संयुक्त परिवार में दादा–दादी, माता–पिता, चाचा–चाची, बुआ, भाई, बहन, नाती, पोते सब एक साथ रहते है। परिवार के सभी सदस्य कुछ न कुछ अर्जन करते है। कोई अधिक कमाता है तो कोई कम। परन्तु यदि संयुक्त परिवार है तो परिवार में किसी भी व्यक्ति को कोई कठिनाई नहीं होने पाती। इसका कारण यह है कि जो अधिक अर्जन करता है उसका सहयोग पूरे परिवार के साथ रहता है। इस कारण से परिवार के सभी सदस्यों का कार्य आसानी से चलता रहता है। किन्तु आजकल देखा यह जा रहा है कि न्यूक्लियर फेमिली अर्थात् छोटे परिवार का प्रचलन बढ़ता जा रहा है। छोटा परिवार हमारी संस्कृति के अनुकूल नहीं है। यह पाश्चात्य सभ्यता की देन और प्रभाव है।

न्यूक्लियर फैमिली इसलिए बढ़ रही है कि नई पीढ़ी के लोगों की ओपिनियन पुरानी पीढ़ी के लोगों से मेल नहीं खाती। इसलिए वे अपने परिवार को अलग रखना ही अधिक अच्छा समझते हैं। प्राचीनकाल में परिवार के सभी लोग एक स्थानों पर बैठकर एक–दूसरे के अभिप्राय को

समझते थे। अंत में कोई निर्णय होता था किन्तु आज ऐसी स्थिति नहीं है। जैसे पाश्चात्य देशों में पति–पत्नी और बच्चे ही परिवार के सदस्य होते है। जैसे ही बच्चा बड़ा होता है विवाह करके वह अपने परिवार को लेकर अलग हो जाता है।

यही प्रथा आजकल अपने देश में भी देखी जा रही है। जैसे ही बच्चे की शादी हुई, वह अपनी पत्नी को लेकर अलग राह अपना लेता है। वह यह सोचता है कि मेरे द्वारा कमाया गया पैसा केवल पत्नी और बच्चे पर ही खर्च हो। यह सोच ठीक नहीं है जिस माता–पिता ने बच्चों को अनेक कष्ट सहकर पाल–पोषकर बड़ा किये है, उनकी भी कुछ अपेक्षाएं होती है। किन्तु जैसे ही बच्चा अपने पांव पर खड़ा हुआ वह अपने को परिवार से अलग मानने लगता है और अपने को परिवार से अलग कर लेता है। भारत देश में वसुधैव कुटुम्बकम् का सूत्र बहुत प्राचीन है।